अध्याय – 4

बिहारी सतसई से कुछ पद : बिहारी

जन्म – सन् 1595 ई.
मृत्यु – सन् 1663 ई.

गागर में सागर भरने वाले रीतिकाल के महान् कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। उन्होंने आमेर के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबार में पहुँचकर अल्पवयस्का रानी के मोहपाश में राज–कर्तव्य भूले राजा को एक दोहे के द्वारा सावचेत किया। काव्य–पारखी राजा ने उनका सम्मान किया व अपने दरबार में सम्मानजनक स्थान दिया।

बिहारी ने 'सतसई' की रचना की। कवि ने भक्ति, नीति, श्रृंगार, प्रकृति–चित्रण, ज्योतिष एवं बहुआयामी ज्ञान पर आधारित दोहों की रचना कर अक्षय कीर्ति अर्जित की। वे निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुए तथा राधा–कृष्ण की भक्ति की। उनकी रचनाओं में उक्ति वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थ–गाम्भीर्य, अर्थ–विस्तार अलंकारिकता तथा कल्पना की समाहार शक्ति का विलक्षण समावेश है।

उनकी समाहार शक्ति के कारण ही कहा गया है–

सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर।।

प्रस्तुत पाठ में बिहारी के भक्ति, नीति एवं श्रृंगार के दोहे लिए गए हैं। कवि सांसारिक–बाधाओं से मुक्ति हेतु राधाजी की आराधना करता है तो दूसरी तरफ अपने प्रभु श्रीकृष्ण को उपालम्भ देता है कि आपको भी संसार की हवा लग गई है। मुक्तात्माओं के सांनिध्य से अधम भी मुक्त हो जाता है। श्रीकृष्ण की बातों का आनन्द–रस पाने के लिए गोपियाँ उनकी मुरली छिपा लेती हैं। वन में कृष्ण के आते ही बिना वर्षा मोर नाचने लगते हैं। नायक व नायिका भरे भवन में संकेतों से वार्तालाप करते हैं। झीने वस्त्रों में नायिका ऐसे सुशोभित हो रही है जैसे सागर में कल्पवृक्ष की डाल।

भक्ति, नीति एवं श्रृंगार के दोहे

मेरी भव–बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परे, स्याम हरित दुति होइ।।

तौ पर वारौ उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान।।

बंधु भए का दीन के, को तार्‌यौ रघुराइ।

तूठे तूठे फिरत हौ, झूठे बिरद कहाइ।।

कब को टेरतु दीन–रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत गुरु, जगनाइक जग बाइ।।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों–ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जलु होइ।।

भजन कह्यौ तातैं भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरिभजन जातैं कह्यौ, सो तैं भज्यौं गँवार ।।

अजौ तर्‌यौना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग।
नाकवास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतन के संग।।

सघन कुंज छाया सुखद, सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जातु अजौं वहै, उहि जमुना के तीर।।

सोहत ओढैं पीत पटु, स्याम सलौनैं गात ।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।।

इहीं आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब के मूल।
ह्वै है फेरि बसन्त ऋतु, इन डारनु वै फूल।।

को छूट्‌यौ इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत, त्यौं त्यौं उरझत जात।।

बतरस–लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ ।।

नाचि अचानक ही उठै, बिनु पावस बन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नन्दकिसोर।।

लिखन बैठि जाकी छबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ।।

झीनै पट में झुलमुली झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सपल्लव डार।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सौं बात।।

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ।।

कहत सबै बेंदी दियै अंकु दसगुनौ होतु।
तिय–लिलार बेंदी दियै, अगनितु बढतु उदोतु।।

डीठि न परतु समान–दुति कनक–कनक से गात।
भूषन कर करकस लगत, परसि पिछाने जात ।।

अंग अंग नग जगमगत, दीपसिखा सी देह ।
दिया बढाएँ हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।

शब्दार्थ–

भव – संसार	लसति – बिलास करती है
सुरतरु – कल्पवृक्ष	गेह – घर
जग–बाइ – संसार की वायु (संसार का बुरा प्रभाव)	
अनुरागी – प्रेमी	बूड़ै – डूबना
उदोतु – प्रकाश, शोभा	कनक – सोना
परसि – स्पर्श	पावस – वर्षा ऋतु
बतरस – बातचीत का आनंद	लुकाइ – छिपाना
नटि जाइ – मुकर जाती है	सलोने – सुंदर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'बिहारी सतसई' में किस रस की प्रधानता है –

(अ) शांत (ब) शृंगार
(स) वीर (द) हास्य ( )

2. बिहारी की काव्य शैली है –

(अ) मुक्तक काव्य शैली (ब) खण्ड काव्य शैली

(स) गीति काव्य शैली (द) प्रबंध काव्य शैली ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'कब को टेरतु दीन–रट ..... जगनाइक जग बाइ।' प्रस्तुत दोहे में कवि ने उलाहना देते हुए किस पर कटाक्ष किया है ?
2. किस लालच में गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली छिपा लेती हैं ?
3. श्री कृष्ण के आगमन पर वन के मोर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ?
4. समान आभा के कारण नज़र न आने वाले नायिका के आभूषणों की पहचान किस प्रकार होती है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'जगत् के चतुर चितेरे को भी मूढ़ बनना पड़ा।' कवि ने ऐसा क्यों कहा ?
2. ''कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
   भरे भौन में करत है, नैननु ही सौं बात।।''
   प्रस्तुत दोहे के माध्यम से नायक–नायिका आँखों की चेष्टा के द्वारा हृदय के किन भावों को प्रकट कर रही है ?
3. ''अंग अंग नग जगमगत दीपशिखा सी देह
   दिया बढाएँ हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।''
   प्रस्तुत दोहे में सखी नायक से नायिका की छवि प्रशंसा करते हुए क्या कहना चाहती है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. ''कहत सबै बेंदी ..... बढतु उदोतु।'' प्रस्तुत दोहे का भाव लिखिए।
2. ''कागद पर लिखत ..... हिय की बात।'' दोहे की व्याख्या कीजिए।